https://www.aartichalisa.com/saraswati-chalisa/

सरस्वती चालीसा

|| दोहा ||

जनक जननि पद्म दुरज,

निज मस्तक पर धारि।

बन्दौं मातु सरस्वती,

बुद्धि बल दे दातारि |

पूर्ण जगत में व्याप्त तव,

महिमा अमित अनंतु।

राम सागर के पाप को,

मातु तु ही अब हन्तु |

|| चौपाई ||

जय श्री सकल बुद्धि बलरासी,

जय सर्वज्ञ अमर अविनाशी |

जय जय जय वीणाकर धारी,

करती सदा सुहंस सवारी |

रूप चतुर्भुज धारी माता,

सकल विश्व अन्दर विख्याता |

जग में पाप बुद्धि जब होती,

तब ही धर्म की फीकी ज्योति |

तब ही मातु का निज अवतारी,

पाप हीन करती महतारी |

वाल्मीकिजी थे हत्यारे,

तव प्रसाद जानै संसारा |

रामचरित जो रचे बनाई,

आदि कवि की पदवी पाई |

कालिदास जो भये विख्याता,

तेरी कृपा दृष्टि से माता |

तुलसी सूर आदि विद्वाना,

भये और जो ज्ञानी नाना |

तिन्ह न और रहेउ अवलम्बा,

केव कृपा आपकी अम्बा |

करहु कृपा सोइ मातु भवानी,

दुखित दीन निज दासहि जानी|

पुत्र करहिं अपराध बहूता,

तेहि न धरई चित माता |

राखु लाज जननि अब मेरी,

विनय करउं भांति बहु तेरी |

मैं अनाथ तेरी अवलंबा,

कृपा करउ जय जय जगदंबा |

मधुकैटभ जो अति बलवाना,

बाहुयुद्ध विष्णु से ठाना |

समर हजार पाँच में घोरा,

फिर भी मुख उनसे नहीं मोरा |

मातु सहाय कीन्ह तेहि काला,

बुद्धि विपरीत भई खलहाला |

तेहि ते मृत्यु भई खल केरी,

पुरवहु मातु मनोरथ मेरी |

चंड मुण्ड जो थे विख्याता,

क्षण महु संहारे उन माता |

रक्त बीज से समरथ पापी,

सुरमुनि हदय धरा सब काँपी |

काटेउ सिर जिमि कदली खम्बा,

बारबार बिन वउं जगदंबा |

जगप्रसिद्ध जो शुंभनिशुंभा,

क्षण में बाँधे ताहि तू अम्बा |

भरतमातु बुद्धि फेरेऊ जाई,

रामचन्द्र बनवास कराई |

एहिविधि रावण वध तू कीन्हा,

सुर नरमुनि सबको सुख दीन्हा |

को समरथ तव यश गुन गाना,

निगम अनादि अनंत बखाना |

विष्णु रुद्र जस कहिन मारी,

जिनकी हो तुम रक्षाकारी |

रक्त दन्तिका और शताक्षी,

नाम अपार है दानव भक्षी |

दुर्गम काज धरा पर कीन्हा,

दुर्गा नाम सकल जग लीन्हा |

दुर्ग आदि हरनी तू माता ,

कृपा करहु जब जब सुखदाता |

नृप कोपित को मारन चाहे,

कानन में घेरे मृग नाहे |

सागर मध्य पोत के भंजे,

अति तूफान नहिं कोऊ संगे |

भूत प्रेत बाधा या दुःख में,

हो दरिद्र अथवा संकट में |

नाम जपे मंगल सब होई,

संशय इसमें करई न कोई |

पुत्रहीन जो आतुर भाई,

सबै छांड़ि पूजें एहि भाई |

करै पाठ नित यह चालीसा,

होय पुत्र सुन्दर गुण ईशा |

धूपादिक नैवेद्य चढ़ावै,

संकट रहित अवश्य हो जावै |

भक्ति मातु की करैं हमेशा,

निकट न आवै ताहि कलेशा |

बंदी पाठ करें सत बारा,

बंदी पाश दूर हो सारा |

रामसागर बाँधि हेतु भवानी,

कीजै कृपा दास निज जानी |

|| दोहा ||

मातु सूर्य कान्ति तव,

अन्धकार मम रूप |

डूबन से रक्षा करहु

परूँ न मैं भव कूप |

बलबुद्धि विद्या देहु मोहि,

सुनहु सरस्वती मातु |

राम सागर अधम को

आश्रय तू ही ददातु |